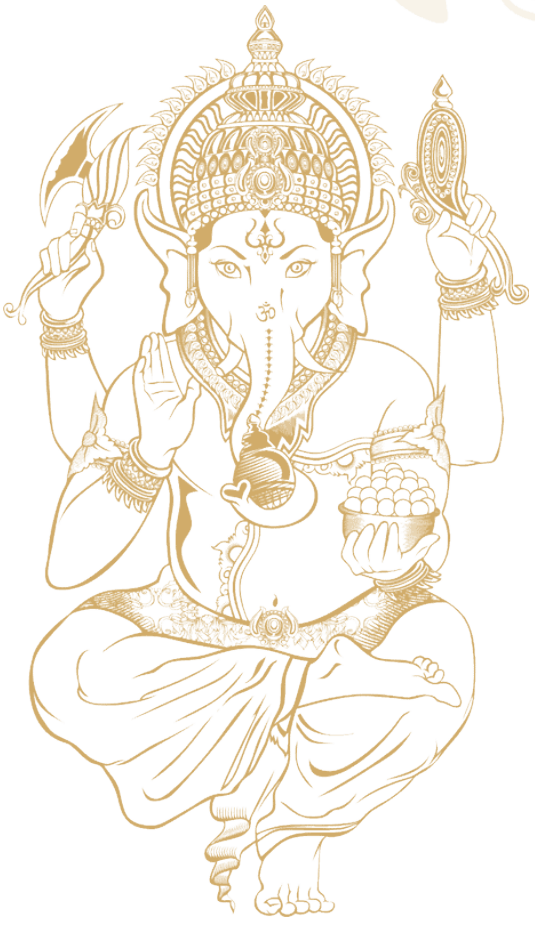

Ashish

Priyanka

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121154601

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121154601 Date: 03/02/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
18/06/1986	जन्म तिथि	06/12/2005
बुधवार	दिन	मंगलवार
घंटे 22:00:00	जन्म समय	14:10:00 घंटे
घटी 40:45:22	जन्म समय(घटी)	18:11:06 घटी
India	देश	India
Indore	स्थान	Indore
22:42:00 उत्तर	अक्षांश	22:42:00 उत्तर
75:54:00 पूर्व	रेखांश	75:54:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:24	स्थानिक संस्कार	-00:26:24 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:41:51	सूर्योदय	06:53:33
19:13:00	सूर्यास्त	17:41:26
23:39:57	चित्रपक्षीय अयनांश	23:56:20

मकर	लग्न	मीन
शनि	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
तुला	राशि	मकर
शुक्र	राशि-स्वामी	शनि
स्वाति	नक्षत्र	धनिष्ठा
राहु	नक्षत्र स्वामी	मंगल
3	चरण	1
शिव	योग	व्याघात
विष्टि	करण	कौलव
रो-रोहित	जन्म नामाक्षर	गा-गामिनी
मिथुन	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
शूद्र	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	जलचर
महिष	योनि	सिंह
देव	गण	राक्षस
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
मृग	वर्ग	मार्जार

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

ग्रह	राशि	अंश
लग्न	मीन	20:48:21
सूर्य	वृश्चि	20:23:21
चंद्र	मक	23:30:55
मंगल व	मेष	14:23:41
बुध	वृश्चि	01:13:26
गुरु	तुला	14:44:17
शुक्र	मक	01:45:46
शनि व	कर्क	17:11:21
राहु व	मीन	17:28:14
केतु व	कन्या	17:28:14
हर्ष	कुंभ	13:04:50
नेप	मक	21:20:03
प्लूटो	वृश्चि	29:59:47

विंशोत्तरी
राहु 7वर्ष 2मा 2दि
शनि
20/08/2009
20/08/2028

शनि	23/08/2012
बुध	03/05/2015
केतु	11/06/2016
शुक्र	12/08/2019
सूर्य	24/07/2020
चन्द्र	22/02/2022
मंगल	03/04/2023
राहु	07/02/2026
गुरु	20/08/2028

विंशोत्तरी
मंगल 6वर्ष 10मा 25दि
राहु
01/11/2012
01/11/2030

राहु	15/07/2015
गुरु	08/12/2017
शनि	14/10/2020
बुध	03/05/2023
केतु	21/05/2024
शुक्र	21/05/2027
सूर्य	14/04/2028
चन्द्र	14/10/2029
मंगल	01/11/2030

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:39:57 चित्रपक्षीय अयनांश 23:56:20

लग्न-चलित

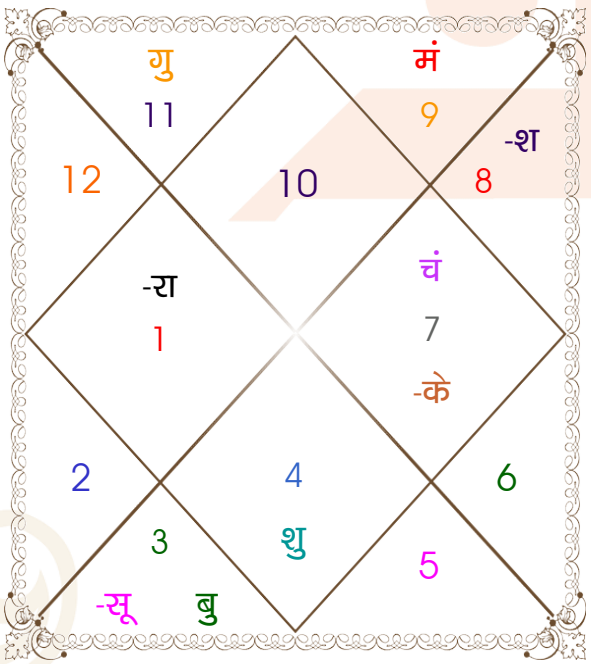

लग्न-चलित

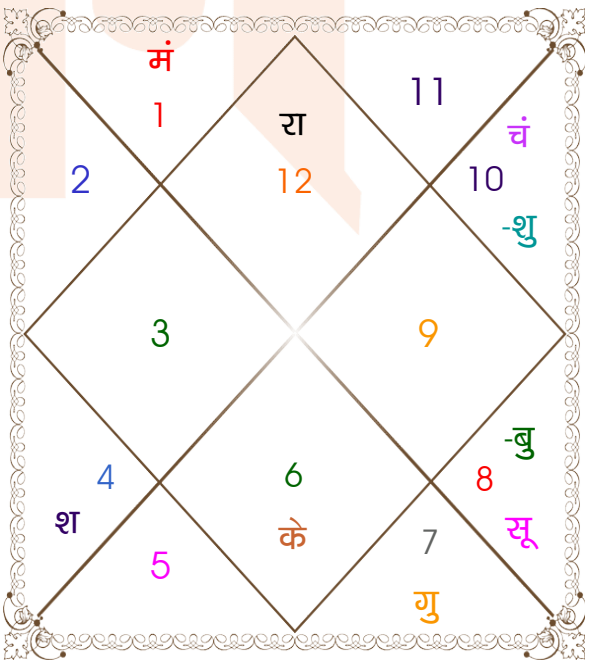

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	महिष	सिंह	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	26.00		

कुल : **26 / 36**

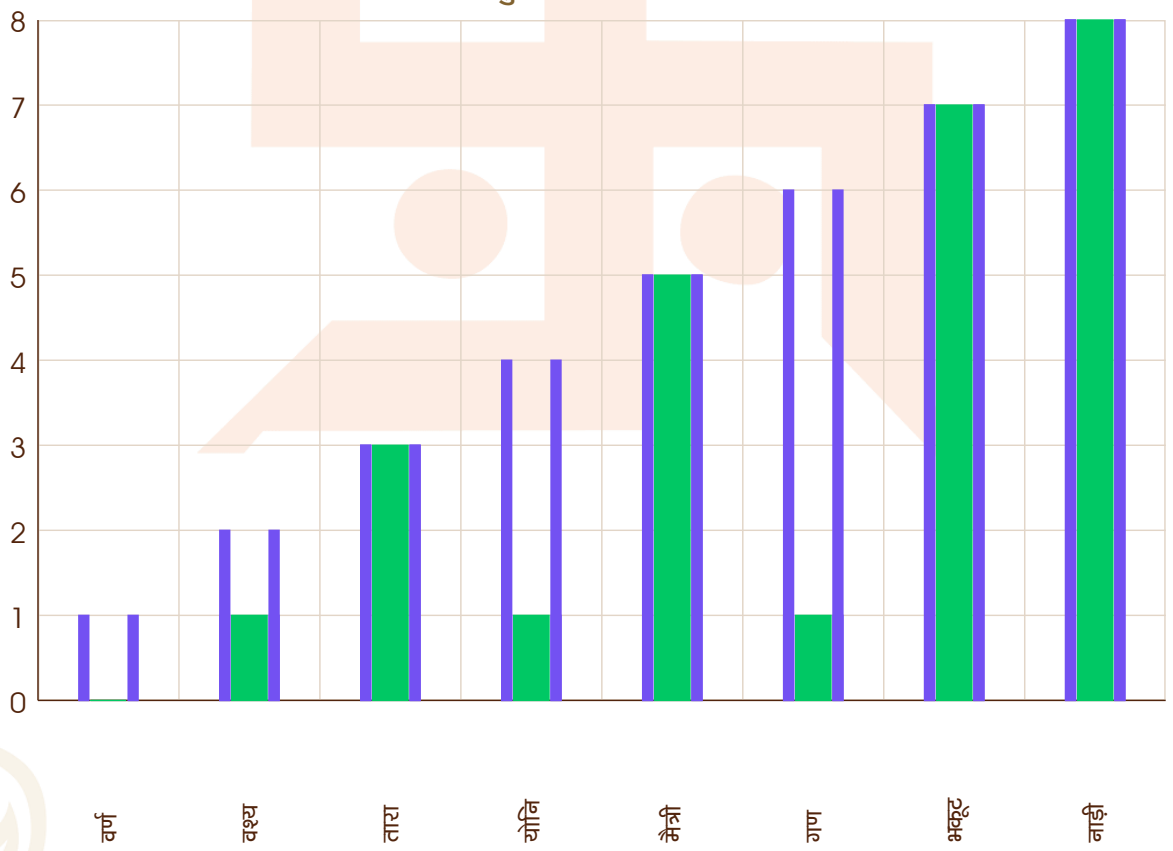

श्री चंचला ज्योतिष एवं अनुष्ठान केंद्र
बी-350 गिरिराज रतन कॉलोनी उज्जैन मध्य प्रदेश
+919340201506,7024210124
कार्तिक जोशी Panditkartikj@gmail.com

अष्टकूट मिलान

ोपी का वर्ग मृग है तथा च्तपलंदां का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर मित्रता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ोपी और च्तपलंदां का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ोपी मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल ोपी कि कुण्डली में द्वादश भाव में धनु राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

च्तपलंदां मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

ोपी तथा च्तपलंदां में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ीपी का वर्ण शूद्र है तथा च्तपलंदां का वर्ण वैश्य है। क्योंकि च्तपलंदां का वर्ण ीपी के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। च्तपलंदां अति स्वार्थी तथा धन-लोलुप होगी। वह हमेशा दूसरों की कीमत पर सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति करती रहेगी। यह च्तपलंदां अपने पति, बच्चों तथा परिवार के लोगों की न तो चिन्ता करेगी और न ही देखभाल। लड़ाई-झगड़ा करके यह हमेशा घर के लोगों का जीना दूभर कर सकती है।

वश्य

ीपी का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं च्तपलंदां का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें ीपी एवं च्तपलंदां दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः ीपी च्तपलंदां पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि ीपी हमेश च्तपलंदां के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

ीपी की तारा सम्पत तथा च्तपलंदां की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से ीपी एवं च्तपलंदां दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। च्तपलंदां एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

ीपी की योनि महिष है तथा च्तपलंदां की योनि सिंह है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग- अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव

ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ीपी एवं त्पलंदां दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि ीपी एवं त्पलंदां के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण ीपी एवं त्पलंदां जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

ीपी का गण देव तथा त्पलंदां का गण राक्षस है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में त्पलंदां निर्दयी, निष्ठुर एवं क्रूर स्वभाव की हो सकती हैं जो वर, उसके बच्चों तथा परिवार के सदस्यों के लिए बुरा एवं घातक साबित हो सकता है। ऐसी पत्नी से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह अपने पति, परिवार अथवा सामाजिक दायित्वों का अच्छी प्रकार से निर्वहन करेंगी। त्पलंदां की अक्सर दूसरों से लड़ाई-झगड़ा करना एवं लोगों को उकसाना इसी प्रकार की आदत होगी।

भकूट

ीपी से त्पलंदां की राशि चतुर्थ भाव में स्थित है तथा त्पलंदां से ीपी की राशि दशम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके कारण ीपी परिश्रमी एवं अपने व्यवसाय में काफी अच्छे होंगे। अपने व्यवसाय में लगन, निष्ठा एवं मेहनत के कारण उन्हें सभी से प्रशंसा प्राप्त होती रहेगी। दूसरी ओर त्पलंदां घरेलू होंगी। अपने आतिथ्य भाव एवं सब का ध्यान रखने तथा बड़ों को सम्मान देने की प्रवृत्ति कारण परिवार के सदस्यों की आंखों का तारा होंगी। पति-पत्नी के बीच असीम प्रेम, सहयोग एवं सामंजस्य बना रहेगा।

नाड़ी

ीपी की नाड़ी अन्त्य है तथा त्पलंदां की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

ोपी की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा च्तपलंदां की राशि पृथ्वी तत्व युक्त मकर राशि है। अतः इसके प्रभाव से ोपी एवं च्तपलंदां का दाम्पत्य जीवन में सामान्यतया मतभेद रहेगा तथा परस्पर प्रेम पूर्वक रहने के लिए यत्नशील रहेंगे। अतः मिलान सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा।

ोपी की राशि का स्वामी शुक्र तथा च्तपलंदां की जन्म राशि का स्वामी शनि परस्पर मित्र राशियों में पड़ते हैं। अतः सुखी वैवाहिक जीवन के लिए यह स्थिति शुभ रहेगी। इसके प्रभाव से ोपी और च्तपलंदां के मध्य सहयोग सदभाव तथा समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। वे एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे फलतः परस्पर संबधों में मधुरता बनी रहेगी।

ोपी और च्तपलंदां की राशियां परस्पर चतुर्थ तथा दशम में पड़ती हैं। शास्त्रानुसार यह शुभ भकूट माना जाता है। इसके प्रभाव से दाम्पत्य जीवन में सुख शांति रहेगी तथा ोपी और च्तपलंदां सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ होंगे। वे एक दूसरे की स्वतंत्रता तथा अस्तित्व का पूर्ण सम्मान करेंगे जिससे आपस में समानता एवं सदभाव का व्यवहार रहेगा तथा समय सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ोपी का वश्य मानव तथा च्तपलंदां का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में स्वाभाविक शत्रुता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में असमानता होगी। साथ ही शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी आवश्यकताएं अलग अलग होंगी जिससे काम संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में असमर्थ रहेंगे।

ोपी का वर्ण शूद्र तथा च्तपलंदां का वर्ण वैश्य है। अतः ोपी किसी भी कार्य को ईमानदारी तथा परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा च्तपलंदां की प्रवृति धनार्जन के प्रति अधिक रहेगी तथा वणिक बुद्धि से अपने कार्यो को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी।

धन

ोपी सम्पत तथा च्तपलंदां अतिमित्र तारा में उत्पन्न हुए है। अतः इसके शुभ प्रभाव से इनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा इच्छित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इनका भकूट सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सामान्य रूप से इनकी स्थिति रहेगी लेकिन मंगल का ोपी की आर्थिक स्थिति पर दुष्प्रभाव होगा जिससे यदा कदा वे आर्थिक विषमता का सामना कर सकते हैं।

ोपी भाग्यवान तथा धनाढ्य व्यक्ति होंगे तथा च्तपलंदां के शुभ प्रभाव से धनऐश्वर्य की अभिवृद्धि करने में सफल होंगे। साथ ही अनायास धन प्राप्ति के भी योग बनेंगे। लेकिन ोपी को अपनी व्ययशील प्रवृति पर नियंत्रण रखने की कोशिश करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

ोपी की नाड़ी अन्त्य तथा च्तपलंदां की नाड़ी मध्य है। अतः नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका इनके स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं होगा परन्तु मंगल का च्तपलंदां के स्वास्थ्य पर विशेष अशुभ प्रभाव रहेगा। इससे वे रक्त या पित संबधी परेशानियां प्राप्त करेंगी तथा गुप्त या धातु संबधी रोगों का भी उन्हें सामना करना पड़ सकता है। साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी कष्ट की अनुभूति करेंगी। अतः इन प्रभावों में न्यूनता लाने के लिए च्तपलंदां को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ोपी और च्तपलंदां का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ोपी और च्तपलंदां के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में च्तपलंदां के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन च्तपलंदां को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में च्तपलंदां को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ोपी और च्तपलंदां सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ोपी और च्तपलंदां का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

च्तपलंदां के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत च्तपलंदां के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

च्तपलंदां अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार च्तपलंदां के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

ोीपी के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को ोीपी अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी ोीपी के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण ोीपी के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।